NEXT IAS

दैनिक समसामयिकी विश्लेषण

समय: 45 मिनट

दिनाँक: 27-09-2024

विषय सूची

CDSCO ने "मानक गुणवत्ता के अनुरूप नहीं" दवाओं की सूची जारी की

भारत-इंडोनेशिया: राजनयिक संबंधों की 75वीं वर्षगांठ

वैश्विक शासन सुधारों पर भारत के विचार

अधिक प्रभावी और न्यायसंगत नैदानिक परीक्षणों के लिए वैश्विक मार्गदर्शन

प्रधानमंत्री मोदी ने राष्ट्र को 3 परम रुद्र सुपर कंप्यूटर समर्पित किए

विश्व पर्यटन दिवस 2024

सशस्त्र बल (विशेष शक्तियाँ) अधिनियम (AFSPA) को नागालैंड और आंध्र प्रदेश के कुछ हिस्सों तक बढ़ाया गया

स्पंज शहर: शहरी बाढ़ का समाधान

संक्षिप्त समाचार

हिंद महासागर रिम एसोसिएशन (IORA)

IMF द्वारा पाकिस्तान के लिए 7 अरब डॉलर के बेलआउट को मंजूरी

भारत विश्व का तीसरा सबसे बड़ा इथेनॉल उत्पादक और उपभोक्ता है

अभेद (ABHED)

CDSCO ने "मानक गुणवत्ता के अनुरूप नहीं" दवाओं की सूची जारी की

समाचार में

- केंद्रीय औषधि मानक नियंत्रण संगठन (CDSCO) द्वारा हाल ही में की गई गुणवत्ता नियंत्रण जांच में 53 दवाओं की सुरक्षा और प्रभावशीलता पर चिंता व्यक्त की है, जिनमें पैरासिटामोल और पैन डी जैसी व्यापक रूप से उपयोग की जाने वाली दवाएं भी शामिल हैं।

परिचय

- कई दवाइयाँ "मानक गुणवत्ता के अनुरूप नहीं" (NSQ) पाई गईं, जिनमें से कुछ को दवा परीक्षण प्रयोगशालाओं द्वारा नकली घोषित किया गया।
- इससे सार्वजनिक स्वास्थ्य संबंधी गंभीर चिंताएँ उत्पन्न होती हैं और यह दवाओं की गुणवत्ता पर डेटा प्रस्तुत करने में कई राज्यों की विफलता को भी प्रकट करता है।
- इससे पहले, दवा नियामक ने जोखिमपूर्ण निश्चित खुराक वाली दवा संयोजनों पर सक्रिय रूप से प्रतिबंध लगा दिया था, जिससे फार्मास्यूटिकल्स में सख्त गुणवत्ता नियंत्रण उपायों की आवश्यकता पर और अधिक प्रकाश डाला गया।

भारत में औषधि विनियमन

- भारत में औषधि विनियमन मुख्य रूप से केंद्रीय औषधि मानक नियंत्रण संगठन (CDSCO) द्वारा नियंत्रित होता है, जो स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के अधीन कार्य करता है।
    - CDSCO भारत के राष्ट्रीय विनियामक प्राधिकरण (NRA) के रूप में कार्य करता है। ड्रग कंट्रोलर जनरल ऑफ इंडिया (DCGI) CDSCO का प्रमुख है और दवाओं के लिए मानक निर्धारित करने के साथ-साथ नई दवाओं तथा नैदानिक परीक्षणों की मंजूरी के लिए उत्तरदायी है।
    - प्रत्येक राज्य के पास अपने अधिकार क्षेत्र में दवाओं के निर्माण, बिक्री और वितरण की निगरानी के लिए अपना स्वयं का विनियामक प्राधिकरण है।
- भारत में औषधियों और फार्मास्यूटिकल्स का विनियमन औषधि एवं प्रसाधन सामग्री अधिनियम, 1940 और औषधि एवं प्रसाधन सामग्री नियम, 1945 के अंतर्गत किया जाता है, जिसका उद्देश्य भारत में विक्रय तथा उपभोग की जाने वाली औषधियों की सुरक्षा, प्रभावकारिता व गुणवत्ता सुनिश्चित करना है।

भारत में औषधि विनियमन से जुड़े मुद्दे

- **गुणवत्ता नियंत्रण के मुद्दे:** घटिया और नकली दवाओं की लगातार रिपोर्ट गुणवत्ता नियंत्रण में कमियों को प्रकट करती हैं।
- **अपर्याप्त निगरानी और प्रवर्तन:** CDSCO और राज्य औषधि नियंत्रण प्राधिकरणों की क्षमता संसाधनों तथा जनशक्ति के मामले में सीमित है।
- **व्यापक पोस्ट-मार्केट निगरानी का अभाव:** यह सुनिश्चित करने के लिए कि दवाएँ बाज़ार में आने के बाद भी सुरक्षा मानकों को पूरा करती रहें, एक मजबूत पोस्ट-मार्केटिंग निगरानी प्रणाली का अभाव है।
- **खंडित विनियमन:** केंद्र और राज्य सरकारों के बीच नियामक जिम्मेदारियों का विभाजन प्रायः समन्वय के मुद्दों, अक्षमताओं और राज्यों में प्रवर्तन में भिन्नताओं को जन्म देता है।
    - अन्य मुद्दे जैसे, प्रशिक्षित जनशक्ति की कमी, नैदानिक परीक्षणों में पारदर्शिता की कमी, अनुमोदन के लिए नियामक निकायों पर दबाव आदि।
- माशेलकर समिति (2003) ने भारत के औषधि नियामक ढांचे में प्रशिक्षित और पर्याप्त कर्मियों की कमी को एक महत्वपूर्ण मुद्दे के रूप में पहचाना।

सुधार के लिए आगे की राह

- **विनियामक अवसंरचना को मजबूत करना:** भारत को मजबूत औषधि विनियमन सुनिश्चित करने के लिए बेहतर संसाधनों, कुशल कर्मियों और अवसंरचना के साथ केंद्रीय तथा राज्य औषधि विनियामक प्राधिकरणों की क्षमताओं को बढ़ाने की आवश्यकता है।
- **केंद्रीय और राज्य एजेंसियों के मध्य बेहतर समन्वय:** असंगत विनियमन और प्रवर्तन जैसे मुद्दों को संबोधित करने के लिए CDSCO तथा राज्य औषधि नियंत्रण प्राधिकरणों के बीच बेहतर सहयोग एवं सूचना का आदान-प्रदान आवश्यक है।
- **गुणवत्ता आश्वासन पर ध्यान:** अच्छे विनिर्माण अभ्यास (GMP) में सुधार पर ध्यान दिया जाना चाहिए, यह सुनिश्चित करते हुए कि निर्माता उच्चतम गुणवत्ता मानकों का पालन करें।
- **मजबूत पोस्ट-मार्केटिंग निगरानी:** दवाओं को मंजूरी मिलने और बाजार में जारी होने के बाद उनकी सुरक्षा, प्रभावकारिता और गुणवत्ता की निरंतर निगरानी के लिए एक व्यापक पोस्ट-मार्केटिंग निगरानी प्रणाली स्थापित करने की आवश्यकता है।
- **राष्ट्रीय औषधि प्राधिकरण की स्थापना:** जैसा कि माशेलकर समिति ने औषधि विनियमन की संरचना को सुधारने के लिए सिफारिश की थी।

Source: TH

भारत-इंडोनेशिया: राजनयिक संबंधों की 75वीं वर्षगांठ

समाचार में

- 8वां भारत-इंडोनेशिया विदेश कार्यालय परामर्श नई दिल्ली में आयोजित किया गया।

मुख्य विशेषताएं

- दोनों पक्षों ने राजनीतिक आदान-प्रदान, रक्षा एवं सुरक्षा, समुद्री क्षेत्र, व्यापार तथा निवेश, स्वास्थ्य सेवा और संपर्क सहित द्विपक्षीय संबंधों की व्यापक समीक्षा की।
- उन्होंने आपसी हितों के क्षेत्रीय और वैश्विक मुद्दों पर भी अपने विचार साझा किए।
- दोनों पक्षों ने भारत-इंडोनेशिया राजनयिक संबंधों की स्थापना की 75वीं वर्षगांठ के चल रहे स्मरणोत्सव और इस माइलस्टोन को मनाने के लिए आयोजित विभिन्न गतिविधियों पर चर्चा की।
- दोनों पक्षों ने जुड़ाव के विभिन्न क्षेत्रों में हुई प्रगति पर संतोष व्यक्त किया और सहयोग के नए रास्ते खोजने पर सहमति व्यक्त की।
- अगली FOC पारस्परिक रूप से सुविधाजनक तिथि पर आयोजित करने पर सहमति हुई।

भारत-इंडोनेशिया द्विपक्षीय संबंध

- **सांस्कृतिक और ऐतिहासिक संबंध:** भारत और इंडोनेशिया के बीच दो सहस्राब्दियों से भी अधिक समय से घनिष्ठ सांस्कृतिक तथा वाणिज्यिक संपर्क हैं।
  - भारत से ही हिंदू धर्म, बौद्ध धर्म और बाद में इस्लाम धर्म इंडोनेशिया में फैला।
  - रामायण और महाभारत जैसे भारतीय महाकाव्य इंडोनेशियाई लोक कला तथा नाटकों को प्रभावित करते हैं।
  - दोनों देशों में बाली यात्रा उत्सव उत्साह के साथ मनाया जाता है।
- **राजनीतिक संबंध:** दोनों देशों के पास उपनिवेशवाद, लोकतंत्र, बहुलवाद और प्रगतिशील नेतृत्व के समान अनुभव हैं।

- इंडोनेशिया के राष्ट्रपति सुकर्णो 1950 में भारत के पहले गणतंत्र दिवस के दौरान मुख्य अतिथि थे।
- दोनों राष्ट्रों ने एशिया तथा अफ्रीका के स्वतंत्रता आंदोलनों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और बांडुंग सम्मेलन (1955) और गुटनिरपेक्ष आंदोलन (1961) के गठन में योगदान दिया।
- भारत की 'लुक ईस्ट पॉलिसी' (1991) और 'एक्ट ईस्ट पॉलिसी' (2014) ने द्विपक्षीय संबंधों को गति दी है, विशेषकर राजनीति, सुरक्षा, रक्षा, वाणिज्य तथा संस्कृति में।

- **G20 जुड़ाव:** इंडोनेशिया ने 2022 में "एक साथ रिकवर करें, रिकवर स्ट्रॉन्गर" थीम के साथ G20 प्रेसीडेंसी की अध्यक्षता की।
  - भारत ने इंडोनेशिया द्वारा आयोजित G20 कार्यक्रमों में सक्रिय रूप से भाग लिया और प्रधानमंत्री मोदी ने नवंबर 2022 में बाली में G20 नेताओं के शिखर सम्मेलन में भाग लिया।
  - भारत ने दिसंबर 2022 में G20 प्रेसीडेंसी संभाली, जिसमें इंडोनेशिया की मजबूत भागीदारी के साथ 100 से अधिक बैठकें आयोजित की गईं।
- **आर्थिक संबंध:** 2022-23 के लिए द्विपक्षीय व्यापार 38.85 बिलियन अमरीकी डॉलर था, जिसमें भारतीय निर्यात 10.02 बिलियन अमरीकी डॉलर और आयात 28.82 बिलियन अमरीकी डॉलर था।
  - भारत इंडोनेशियाई कोयले, कच्चे पाम तेल और अन्य संसाधनों का एक प्रमुख खरीदार है। भारत परिष्कृत पेट्रोलियम, वाहन, कृषि उत्पाद और बहुत कुछ निर्यात करता है।
- **निवेश:** इंडोनेशिया में भारतीय निवेश 4,750 परियोजनाओं (2000-2022) में 1,219 मिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुँच गया है।
  - भारतीय निवेश का अधिकांश भाग सिंगापुर और अन्य गेटवे के माध्यम से इंडोनेशिया में प्रवेश करता है, इसलिए वास्तविक मात्रा अधिक हो सकती है।
  - भारतीय निवेश के क्षेत्रों में विविध क्षेत्रों में संयुक्त उद्यम शामिल हैं।
- **नीली अर्थव्यवस्था के अवसर:** नीली अर्थव्यवस्था महासागरों और समुद्रों से संबंधित स्थायी आर्थिक गतिविधियों पर ध्यान केंद्रित करती है।
  - इंडोनेशिया स्थायी आर्थिक विकास के लिए अपने समुद्री संसाधनों का लाभ उठाने में अग्रणी है।
- **डिजिटल और तकनीकी सहयोग:**भारत और इंडोनेशिया दोनों ही अत्यधिक डिजिटल हैं और सार्वजनिक सेवाओं तथा ई-गवर्नेंस के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग करते हैं।
  - डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना (DPI) के साथ भारत की सफलता इंडोनेशिया के लिए एक मॉडल के रूप में कार्य कर सकती है, जो अपने DPI को भी विकसित कर रहा है।
  - साइबर सुरक्षा सहयोग के लिए एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है क्योंकि दोनों देश डिजिटल सार्वजनिक सेवाओं में नए सुरक्षा जोखिमों का सामना कर रहे हैं।
- **रक्षा:** भारत और इंडोनेशिया के बीच मजबूत रक्षा तथा सुरक्षा सहयोग है। मई 2018 में, प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी की यात्रा के दौरान, दोनों देशों ने एक नए रक्षा सहयोग समझौते पर हस्ताक्षर किए, जो उनके संबंधों को एक व्यापक रणनीतिक साझेदारी के रूप में आगे बढ़ाता है।
  - अभ्यास गरुड़ शक्ति भारतीय विशेष बलों और इंडोनेशियाई विशेष बलों के बीच एक संयुक्त प्रशिक्षण अभ्यास है।

भविष्य का दृष्टिकोण

- नीली अर्थव्यवस्था और डिजिटल प्रौद्योगिकी में सहयोग भारत और इंडोनेशिया के लिए आशाजनक अवसर प्रदान करता है।
- ये सहयोग न केवल द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत करेंगे बल्कि व्यापक हिंद-प्रशांत क्षेत्र की समृद्धि में भी योगदान देंगे।

- भारत एवं इंडोनेशिया के लिए समुद्री प्रदूषण, अत्यधिक मछली पकड़ने, समुद्री खेती, समुद्री सुरक्षा, अपशिष्ट प्रबंधन, नीले कार्बन क्षेत्रों और ईंधन तथा खाद्य उत्पादन के लिए समुद्री संसाधन उपयोग पर सहयोग करने की संभावना है।

Source: AIR

वैश्विक शासन सुधारों पर भारत के विचार

सन्दर्भ

- भारत के विदेश मंत्री एस जयशंकर ने न्यूयॉर्क में G20 विदेश मंत्रियों की बैठक को संबोधित करते हुए वैश्विक शासन सुधारों पर भारत के दृष्टिकोण पर बल दिया।

परिचय

- भारत ने वैश्विक शासन सुधार के तीन प्रमुख क्षेत्रों पर अपने विचार व्यक्त किए, जिनमें शामिल हैं;
- संयुक्त राष्ट्र और उसके सहायक निकायों में सुधार,
- अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय संरचना में सुधार और
- बहुपक्षीय व्यापार प्रणाली में सुधार।

संयुक्त राष्ट्र और उसके सहायक निकायों में सुधार

- **वर्तमान स्थिति:** संयुक्त राष्ट्र की स्थापना 1945 में हुई थी और तब से वैश्विक व्यवस्था अधिक परस्पर जुड़ी हुई और बहुध्रुवीय हो गई है।
  - इसके बावजूद, संयुक्त राष्ट्र, विशेष रूप से संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद, कुछ प्रमुख शक्तियों द्वारा वर्चस्व में है।
- **भारत का तर्क:** संयुक्त राष्ट्र, विशेष रूप से UNSC, अपनी पुरानी संरचना के कारण आतंकवाद, जलवायु परिवर्तन या विविध क्षेत्रों में संघर्ष जैसी आधुनिक चुनौतियों से निपटने के लिए संघर्ष करता है।
- भारत लंबे समय से UNSC में स्थायी सदस्यता की मांग कर रहा है, जिसमें बल दिया गया है कि परिषद को शक्ति के वैश्विक वितरण को प्रतिबिंबित करना चाहिए।

अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय ढांचे में सुधार

- **वर्तमान स्थिति:** द्वितीय विश्व युद्ध के बाद स्थापित अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) और विश्व बैंक को अब सतत विकास लक्ष्य (SDGs) तथा जलवायु परिवर्तन जैसी समकालीन वैश्विक चुनौतियों से निपटने के लिए अपर्याप्त माना जाता है।
- **भारत का तर्क:** समावेशी विकास, गरीबी से निपटने और जलवायु से संबंधित वित्तपोषण आवश्यकताओं को संबोधित करने पर ध्यान केंद्रित करने के लिए बहुपक्षीय विकास बैंकों (MDBs) में सुधार किया जाना चाहिए।

बहुपक्षीय व्यापार प्रणाली में सुधार

- **वर्तमान स्थिति:** विश्व व्यापार संगठन (WTO) वैश्विक व्यापार प्रणाली की नींव के रूप में कार्य करता है, जो नियमों को लागू करके मुक्त व्यापार को बढ़ावा देता है।
  - हालांकि, कुछ देशों द्वारा संरक्षणवादी नीतियों, सब्सिडी और बाजार को विकृत करने वाली प्रथाओं पर चिंताओं ने निष्पक्ष प्रतिस्पर्धा को बाधित किया है, विशेषकर विकासशील देशों के लिए।

- **भारत का तर्क:** भारत एक नियम-आधारित, गैर-भेदभावपूर्ण, निष्पक्ष, खुले, समावेशी, न्यायसंगत और पारदर्शी बहुपक्षीय व्यापार प्रणाली का समर्थन करता है।

निष्कर्ष

- संयुक्त राष्ट्र, वित्तीय संस्थाओं और व्यापार में सुधारों पर बल देकर भारत यह सुनिश्चित करना चाहता है कि ये प्रणालियाँ सभी देशों, विशेष रूप से विकासशील देशों के हितों को प्रतिबिंबित करें, न कि कुछ शक्तिशाली देशों की ओर झुकी हों।
- यह अधिक बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था का समर्थन करने के भारत के व्यापक कूटनीतिक प्रयासों के अनुरूप है।

Source: AIR

अधिक प्रभावी और न्यायसंगत नैदानिक परीक्षणों के लिए वैश्विक मार्गदर्शन

समाचार में

- विश्व स्वास्थ्य संगठन ने सभी आय स्तरों को लक्ष्य करते हुए वैश्विक स्तर पर नैदानिक परीक्षण डिजाइन, संचालन और निगरानी में सुधार के लिए नए दिशा-निर्देश जारी किए हैं।

परिचय

- यह मार्गदर्शन विश्व स्वास्थ्य सभा के संकल्प WHA 75.8 के आधार पर विकसित किया गया था, जिसमें 48 देशों के लगभग 3,000 हितधारकों से इनपुट लिया गया था।
- **क्षेत्र:** मार्गदर्शन में दवाओं, टीकों, निदान, निवारक देखभाल, डिजिटल स्वास्थ्य और पारंपरिक या हर्बल उपायों सहित स्वास्थ्य हस्तक्षेपों की एक विस्तृत श्रृंखला के लिए परीक्षण शामिल हैं।
- इसका उद्देश्य विश्व भर में सुरक्षित और प्रभावी स्वास्थ्य हस्तक्षेपों तक पहुँच में तेजी लाने के लिए देश के नेतृत्व वाले अनुसंधान और विकास (R&D) को मजबूत करना है।

मुख्य निष्कर्ष

- **नैदानिक परीक्षणों में वैश्विक असमानताएँ:** उच्च आय वाले देशों (HIC) और निम्न तथा मध्यम आय वाले देशों (LMIC) के बीच परीक्षणों की संख्या में विभाजन है (2022 में HIC में 27,133 बनाम LMIC में 24,791)।
  - LMIC को प्रायः बीमारी के भार के कारण परीक्षणों में शामिल किया जाता है, लेकिन परिणामों का उपयोग मुख्य रूप से HIC में अनुमोदन के लिए किया जाता है, जिससे LMIC पीछे रह जाते हैं।
- **कमज़ोर समूहों का सीमित प्रतिनिधित्व:** गर्भवती महिलाओं ने 5% से भी कम परीक्षणों में भाग लिया, और 2022 में केवल 13% परीक्षणों में बच्चों को शामिल किया गया, जिससे साक्ष्य की गुणवत्ता कम हुई तथा इन समूहों के लिए हस्तक्षेपों तक पहुँच कम हुई।
- कमज़ोर जनसँख्या को शामिल न किए जाने से उनके लिए उपचार के विकल्प सीमित हो जाते हैं और स्वास्थ्य संबंधी सिफारिशों में उनका भरोसा कम हो जाता है।

अनुशंसाएँ

- **राष्ट्रीय प्राधिकरण:** पहली बार, WHO ने स्वास्थ्य अधिकारियों, विनियामकों और वित्तपोषकों को बेहतर नैदानिक परीक्षणों की सुविधा के लिए सिफारिशें प्रस्तुत की हैं।

  - यह खराब परीक्षण डिजाइन, सीमित प्रतिभागी विविधता, बुनियादी ढांचे की कमी और नौकरशाही की अक्षमताओं जैसी चुनौतियों का समाधान करता है।
- **प्रतिभागियों की विविधता की आवश्यकता:** WHO साक्ष्य की गुणवत्ता और प्रयोज्यता में सुधार के लिए विविध प्रतिभागियों, विशेष रूप से कम प्रतिनिधित्व वाले समूहों जैसे गर्भवती महिलाओं (परीक्षणों में 5% से कम) और बच्चों (परीक्षणों में 13%) को शामिल करने पर बल देता है।
- **कमजोर समूहों पर ध्यान दें:** गर्भवती, स्तनपान कराने वाली महिलाओं और जोखिम वाली जनसँख्या को परीक्षणों में शामिल करने के लिए विशेष मार्गदर्शन, प्रक्रिया में प्रारंभिक रूप से सुरक्षा को प्राथमिकता दी गई।
  - विशेष रूप से बच्चों के लिए सहमति और स्वीकृति के लिए उपयुक्त प्रक्रियाओं पर बल दिया गया है।
- **सामुदायिक जुड़ाव:** WHO यह सुनिश्चित करने के लिए परीक्षणों में रोगी और समुदाय की भागीदारी को केंद्र में रखने की सिफारिश करता है कि अनुसंधान सार्वजनिक आवश्यकताओं के साथ संरेखित हो और विश्वास बनाए रखे।
- **राष्ट्रीय अनुसंधान और विकास पारिस्थितिकी तंत्र को दृढ करना:** मार्गदर्शन राष्ट्रीय अनुसंधान और विकास पारिस्थितिकी तंत्र को मजबूत करने, निर्णय लेने में सुधार करने तथा स्वास्थ्य नवाचारों तक पहुंच में तेजी लाने के लिए स्थायी वित्तपोषण का आह्वान करता है।

Source: DTE

प्रधानमंत्री मोदी ने राष्ट्र को 3 परम रुद्र सुपर कंप्यूटर समर्पित किए

समाचार में

- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने हाल ही में राष्ट्रीय सुपरकंप्यूटिंग मिशन (NSM) के तहत 130 करोड़ रुपये की लागत के तीन परम रुद्र सुपरकंप्यूटर का उद्घाटन किया।

परिचय

- पुणे, दिल्ली और कोलकाता में तैनात ये स्वदेशी रूप से विकसित सुपरकंप्यूटर भौतिकी, ब्रह्मांड विज्ञान, पृथ्वी विज्ञान और अन्य वैज्ञानिक क्षेत्रों में उन्नत अनुसंधान को बढ़ावा देंगे।
- पुणे में जायंट मीटर रेडियो टेलीस्कोप (GMRT), दिल्ली में इंटर-यूनिवर्सिटी एक्सेलेरेटर सेंटर (IUAC) और कोलकाता में एसएन बोस सेंटर इन प्रणालियों का उपयोग अत्याधुनिक अनुसंधान के लिए करेंगे, जिससे भारत की वैज्ञानिक क्षमताओं में वृद्धि होगी।
- इसके अतिरिक्त, प्रधान मंत्री ने मौसम और जलवायु अनुसंधान पर केंद्रित एक उच्च प्रदर्शन कंप्यूटिंग (HPC) प्रणाली का शुभारंभ किया।
- वे पुणे में भारतीय उष्णकटिबंधीय मौसम विज्ञान संस्थान (IITM) और नोएडा में राष्ट्रीय मध्यम अवधि मौसम पूर्वानुमान केंद्र (NCMRWF) में स्थित हैं। 'अर्का' और 'अरुणिका' नाम की ये प्रणालियाँ उष्णकटिबंधीय चक्रवातों, गरज के साथ बारिश, गर्म लहरों और अन्य महत्वपूर्ण मौसम संबंधी घटनाओं के लिए अधिक सटीक भविष्यवाणियां प्रदान करने के लिए तैयार की गई हैं।

राष्ट्रीय सुपरकंप्यूटिंग मिशन (NSM)

- **परिचय:**
  - यह भारत सरकार द्वारा राष्ट्र के सामाजिक-आर्थिक विकास के लिए सुपरकंप्यूटिंग क्षमता में अग्रणी होने के लिए स्वदेशी प्रयासों को बढ़ावा देने के लिए एक महत्वपूर्ण पहल है।

- इस मिशन का संचालन इलेक्ट्रॉनिक्स तथा आईटी मंत्रालय और विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा संयुक्त रूप से किया गया।

- **प्रमुख विशेषताएं:**
  - **स्वदेशी विकास:** NSM का मुख्य ध्यान प्रोसेसर, नेटवर्क और भंडारण समाधान सहित सुपरकंप्यूटिंग सिस्टम के लिए स्वदेशी हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर विकसित करने पर है।
  - **सहयोगी प्रयास:** इस मिशन का नेतृत्व इलेक्ट्रॉनिक्स तथा सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय (MeitY) और विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी विभाग (DST) द्वारा संयुक्त रूप से किया जा रहा है, जिसमें सेंटर फॉर डेवलपमेंट ऑफ़ एडवांस्ड कंप्यूटिंग (C-DAC) एवं भारतीय विज्ञान संस्थान (IISc), बेंगलुरु से कार्यान्वयन सहायता प्राप्त है।
  - **PARAM श्रृंखला:** PARAM श्रृंखला जैसे विभिन्न सुपरकंप्यूटर पहले ही मिशन के तहत विकसित किए जा चुके हैं, जिन्हें पूरे भारत में प्रमुख शोध संस्थानों में स्थापित किया गया है।
- **प्रभाव:**
  - यह पहल सरकार के "डिजिटल इंडिया" तथा "मेक इन इंडिया" के दृष्टिकोण का समर्थन करती है और भारत को वैश्विक सुपरकंप्यूटिंग मानचित्र में सबसे आगे रखेगी।
  - यह मिशन जलवायु परिवर्तन, स्वास्थ्य सेवा, भौतिक विज्ञान और रक्षा जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में उन्नत अनुसंधान को सक्षम बनाता है।
  - यह क्वांटम कंप्यूटिंग, एआई और बिग डेटा जैसी उभरती प्रौद्योगिकियों में वैश्विक नेता बनने की भारत की महत्वाकांक्षा का समर्थन करता है।

सुपरकंप्यूटर पर मुख्य तथ्य

सुपरकंप्यूटर एक शक्तिशाली कंप्यूटिंग मशीन है जो उच्चतम परिचालन दर पर कार्य करती है, जिसे सामान्यतः फ्लोटिंग-पॉइंट ऑपरेशन प्रति सेकंड (FLOPS) में मापा जाता है।

मुख्य निष्पादन संकेतक:

- **FLOPS(फ्लोटिंग-पॉइंट ऑपरेशन प्रति सेकंड):** सुपरकंप्यूटरों का प्रदर्शन टेराफ्लॉप्स (ट्रिलियन FLOPS) या पेटाफ्लॉप्स (क्वाड्रिलियन फ्लॉप्स) में मापा जाता है।
- **टॉप 500:** विश्व भर के शीर्ष 500 सुपरकंप्यूटरों की उनके प्रदर्शन के आधार पर द्वि-वार्षिक रैंकिंग।

सुपर कंप्यूटर के अनुप्रयोग:

- **मौसम का पूर्वानुमान:** सुपरकंप्यूटर मौसम के पैटर्न की भविष्यवाणी करने, तूफानों का पूर्वानुमान लगाने और जलवायु परिवर्तन की निगरानी करने में महत्वपूर्ण हैं।
- **अंतरिक्ष अन्वेषण:** अंतरिक्ष मिशन, अंतरिक्ष यान डिजाइन और कक्षीय यांत्रिकी से संबंधित सिमुलेशन के लिए उपयोग किया जाता है।
- **कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI):** सुपरकंप्यूटर का उपयोग मशीन लर्निंग और डीप लर्निंग मॉडल के लिए तेजी से किया जा रहा है, क्योंकि वे बड़े डेटासेट को जल्दी से प्रोसेस कर सकते हैं।
- **स्वास्थ्य सेवा और जीनोमिक्स:** दवा की खोज, जीनोम अनुक्रमण और बायोमेडिकल सिमुलेशन के लिए आवश्यक।

भारत के सुपर कंप्यूटर:

- **परम रुद्र:** हाल ही में भारत के राष्ट्रीय सुपरकंप्यूटिंग मिशन के तहत लॉन्च किए गए, ये सुपरकंप्यूटर पुणे, दिल्ली और कोलकाता में तैनात हैं।
- **प्रत्युष और मिहिर:** मौसम पूर्वानुमान के लिए स्थापित भारत के प्रमुख सुपरकंप्यूटर, भारतीय उष्णकटिबंधीय मौसम विज्ञान संस्थान (पुणे) और राष्ट्रीय मध्यम-अवधि मौसम पूर्वानुमान केंद्र

(नोएडा) में रखे गए हैं।
- **परम युवा-II:** सेंटर फॉर डेवलपमेंट ऑफ़ एडवांस्ड कंप्यूटिंग (सी-डैक) द्वारा विकसित, यह भारत में सबसे तेज़ सुपरकंप्यूटरों में से एक था, जिसका उपयोग वैज्ञानिक अनुसंधान के लिए किया जाता था।

विश्व के शीर्ष सुपरकंप्यूटर:
- **फ्रंटियर (USA):** 2023 तक, ओक रिज नेशनल लेबोरेटरी द्वारा विकसित फ्रंटियर, विश्व का सबसे तेज़ सुपरकंप्यूटर है, जिसका प्रदर्शन 1 एक्साफ्लॉप (प्रति सेकंड 1 क्विंटिलियन ऑपरेशन) से अधिक है।
- **फुगाकू (जापान):** रिकेन और फुजित्सु द्वारा विकसित, फुगाकू पहले सबसे तेज़ सुपरकंप्यूटर था और अभी भी शीर्ष प्रदर्शन करने वालों में से एक है, जिसका व्यापक रूप से दवा खोज तथा जलवायु मॉडलिंग जैसे विभिन्न अनुप्रयोगों के लिए उपयोग किया जाता है।

Source: TH

विश्व पर्यटन दिवस 2024

सन्दर्भ

- विश्व पर्यटन दिवस प्रत्येक वर्ष 27 सितम्बर को मनाया जाता है।

परिचय

- **पृष्ठभूमि:** संयुक्त राष्ट्र विश्व पर्यटन संगठन (UNWTO) ने 1980 में विश्व पर्यटन दिवस की स्थापना की, जो 27 सितंबर, 1970 को UNWTO क़ानूनों को अपनाने का प्रतीक है।
- **उद्देश्य:** यह दिवस पर्यटन को सतत विकास और गरीबी उन्मूलन के लिए एक प्रमुख साधन के रूप में उपयोग करने के उद्देश्य से मनाया जाता है
- **2024 का विषय:** 'पर्यटन और शांति।'

भारत में पर्यटन की संभावनाएं

- भारत भौगोलिक रूप से विविधतापूर्ण है और यहाँ विभिन्न प्रकार की संस्कृतियाँ हैं, जो अपने स्वयं के अनुभवों के साथ आती हैं, जो इसे अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन व्यय के मामले में अग्रणी देशों में से एक बनाती हैं।
- 2028 तक, भारत के पर्यटन और आतिथ्य उद्योग से $59 बिलियन से अधिक का राजस्व उत्पन्न होने का अनुमान है।
    - इसके अतिरिक्त, 2028 तक विदेशी पर्यटकों के आगमन (FTA) के 30.5 मिलियन तक पहुँचने का अनुमान है।
- विश्व आर्थिक मंच (WEF) द्वारा प्रकाशित यात्रा और पर्यटन विकास सूचकांक (TTDI) 2024 रिपोर्ट के अनुसार, भारत 119 देशों में 39वें स्थान पर है।
- विश्व यात्रा और पर्यटन परिषद (WTTC) की आर्थिक प्रभाव 2023 रिपोर्ट में, भारत के यात्रा और पर्यटन सकल घरेलू उत्पाद में योगदान में 5.9% की वृद्धि हुई।

पर्यटन को बढ़ावा देने के लाभ

- **विरासत का संरक्षण:** पर्यटन से ऐतिहासिक स्मारकों, मंदिरों, किलों आदि का जीर्णोद्धार और रखरखाव होता है, जिससे भविष्य की पीढ़ियों के लिए उनका संरक्षण सुनिश्चित होता है। ग्रामीण और

ग्रामीण पर्यटन पहल छोटे शहरों और गांवों को आर्थिक लाभ प्रदान कर सकती है, जिससे समावेशी विकास को बढ़ावा मिलता है।

- **सॉफ्ट पावर डिप्लोमेसी:** पर्यटन भारत की संस्कृति, कला और इतिहास को विश्व के सामने प्रदर्शित करके सॉफ्ट पावर डिप्लोमेसी के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण के रूप में कार्य करता है।
- **रोजगार सृजन:** इससे आतिथ्य, परिवहन, टूर गाइडिंग और हस्तशिल्प आदि सहित विभिन्न क्षेत्रों में रोजगार के अवसर सृजित होते हैं।

पर्यटन क्षेत्र में चुनौतियाँ

- **बुनियादी ढांचे की कमी:** विभिन्न स्थलों पर परिवहन, आवास और स्वच्छता सुविधाओं जैसे पर्याप्त बुनियादी ढांचे का अभाव है, जिससे पर्यटकों के अनुभव में बाधा आती है।
- **पर्यटकों के विरुद्ध अपराध:** चोरी, घोटाले और यहां तक कि पर्यटकों के विरुद्ध हिंसक अपराध की घटनाएं सुरक्षा की धारणा को नकारात्मक रूप से प्रभावित करती हैं।
- **अवनति:** अनियमित पर्यटन के कारण कुछ क्षेत्रों (जैसे, हिमालय, गोवा में समुद्र तट) में पर्यावरणीय क्षति हुई है और सांस्कृतिक क्षरण हुआ है, जहां स्थानीय परंपराओं और विरासत स्थलों का अत्यधिक व्यवसायीकरण किया गया है या उनका खराब प्रबंधन किया गया है।
- **वहन क्षमता की समस्या:** कुछ स्थलों पर छोटे लेकिन तीव्र पर्यटक मौसम का अनुभव होता है, जिससे भीड़भाड़ बढ़ जाती है और स्थानीय बुनियादी ढांचे पर दबाव पड़ता है।
    - उत्तराखंड में चार धाम यात्रा के कारण परिवहन बुनियादी ढांचे पर दबाव पड़ता है और मानसून के मौसम में भूस्खलन जैसे सुरक्षा खतरे उत्पन्न होते हैं।

उठाए गए कदम

- **स्वदेश दर्शन योजना:** यह योजना बौद्ध रामायण, तटीय, हिमालयी, रेगिस्तान आदि जैसे थीम आधारित पर्यटन सर्किट विकसित करने पर केंद्रित है।
- **तीर्थयात्रा कायाकल्प और आध्यात्मिक विरासत संवर्धन अभियान (PRASHAD) पर राष्ट्रीय मिशन:** धार्मिक पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए देश भर में तीर्थ स्थलों की पहचान और विकास करने के लिए इसे 2015 में लॉन्च किया गया था।
- **भारत गौरव पर्यटक ट्रेनें:** ये ट्रेनें पर्यटकों को प्रसिद्ध विरासत स्थलों, धार्मिक स्थानों और ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण स्थानों को देखने का अवसर प्रदान करती हैं।
    - काशी कॉरिडोर, महाकाल कॉरिडोर और अयोध्या में राम मंदिर जैसी भारत भर की आध्यात्मिक परियोजनाएँ बड़ी संख्या में पर्यटकों को आकर्षित कर रही हैं और स्थानीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने में सहायता कर रही हैं।
- पर्यटन मंत्रालय ने पर्यटन स्थलों और गंतव्यों के पास रहने वाले स्थानीय लोगों को प्रशिक्षित करने के लिए एक गंतव्य आधारित कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू किया है।
- पर्यटन निर्माण परियोजनाओं के लिए 100% FDI की अनुमति है, जिसमें उत्तम होटल, रिसॉर्ट और अद्वितीय मनोरंजक सुविधाओं का विकास शामिल है।

आगे की राह

- विश्व पर्यटन दिवस वैश्विक अर्थव्यवस्था पर पर्यटन के प्रभाव और विभिन्न संस्कृतियों के बीच आपसी समझ को बढ़ावा देने में इसकी भूमिका पर प्रकाश डालता है।

- पर्यटन केवल एक अवकाश गतिविधि नहीं है; यह आर्थिक विकास, रोजगार सृजन, स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं का समर्थन करने और प्राकृतिक तथा सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण में योगदान देने के लिए एक महत्वपूर्ण चालक है।
- संयुक्त राष्ट्र विश्व पर्यटन संगठन के महासचिव, ज़ुराब पोलोलिकाशविली ने कहा, पर्यटन विश्वास तथा सम्मान का निर्माण करता है, और यह समावेशी विकास एवं संघर्ष के विरुद्ध सुरक्षा को बढ़ावा देता है।

Source: PIB

सशस्त्र बल (विशेष शक्तियां) अधिनियम (AFSPA) को नागालैंड और आंध्र प्रदेश के कुछ हिस्सों तक बढ़ाया गया

समाचार में

- गृह मंत्रालय ने नागालैंड और अरुणाचल प्रदेश के कुछ जिलों में सशस्त्र बल (विशेष शक्तियां) अधिनियम (AFSPA) को छह महीने की अवधि के लिए बढ़ा दिया है।

परिचय

- वर्तमान में, AFSPA नागालैंड, असम, मणिपुर और अरुणाचल प्रदेश के कुछ हिस्सों में लागू है।
- जम्मू और कश्मीर में, कानून को सशस्त्र बल (J&K) विशेष शक्तियां अधिनियम, 1990 के माध्यम से लागू किया जाता है।
- AFSPA सशस्त्र बलों को "अशांत क्षेत्रों" में सार्वजनिक व्यवस्था बनाए रखने के लिए विशेष अधिकार प्रदान करता है।

AFSPA के बारे में

- संसद द्वारा अधिनियमित तथा 1958 में राष्ट्रपति द्वारा अनुमोदित।
- "अशांत क्षेत्रों" में व्यवस्था वापस लाने के लिए सशस्त्र बलों को असाधारण शक्तियाँ तथा प्रतिरक्षा प्रदान करता है।
- विभिन्न धार्मिक, नस्लीय, भाषाई या क्षेत्रीय समूहों या जातियों या समुदायों के सदस्यों के बीच मतभेदों या विवादों के कारण कोई क्षेत्र अशांत हो सकता है।
- **प्रावधान:**
  - **धारा 3:** राज्य/संघ शासित प्रदेश के राज्यपाल को पूरे राज्य या उसके हिस्से को अशांत क्षेत्र घोषित करने का अधिकार देता है।
  - **धारा 4:** सेना को परिसर की तलाशी लेने और बिना वारंट के गिरफ्तारी करने का अधिकार देता है।
  - **धारा 6:** यह निर्धारित करता है कि गिरफ्तार किए गए व्यक्ति और जब्त की गई संपत्ति पुलिस को सौंप दी जाएगी।
  - **धारा 7:** अभियोजन की अनुमति केवल केंद्र सरकार की मंजूरी के बाद दी जाती है।
- **इसके लागू होने के पीछे तर्क**
  - उग्रवाद/आतंकवादी अभियानों में बलों का प्रभावी संचालन।
  - सशस्त्र बलों के सदस्यों की सुरक्षा
  - कानून और व्यवस्था बनाए रखना
  - राष्ट्र की सुरक्षा और संप्रभुता

- **आलोचनाएँ**
  - सुरक्षा एजेंसियों द्वारा अत्याचार और मानवाधिकारों का उल्लंघन।
  - लोकतांत्रिक शासन के विरुद्ध और मौलिक अधिकारों के लिए खतरा
  - उग्रवाद का मुकाबला करने में अप्रभावीता।
  - न्यायमूर्ति जीवन रेड्डी समिति और संतोष हेगड़े समिति ने निरस्त करने की सिफारिश की।
- **आगे की राह**
  - कानून में पारदर्शिता और अस्पष्टता को दूर करना, पूर्वोत्तर में विकास, मानव संसाधन उल्लंघनों पर जांच समय की मांग है।

Source: TH

स्पंज शहर: शहरी बाढ़ का समाधान

सन्दर्भ

- उत्तर भारत में भारी वर्षा के कारण व्यापक बाढ़, भूस्खलन हुआ है, जिससे बुनियादी ढांचे और खाद्य आपूर्ति को हानि पहुंची है, जिससे स्पंज शहरों की नवीन अवधारणा का उपयोग करके निपटा जा सकता है।

भारत में शहरी बाढ़

- शहरी बाढ़ तब आती है जब निर्मित क्षेत्र - जैसे शहर और कस्बे - भारी वर्षा, तेजी से बर्फ पिघलने या जल के बहाव के अन्य स्रोतों के कारण जलमग्न हो जाते हैं।
- ग्रामीण बाढ़ के विपरीत, जो सामान्यतः समतल या निचले क्षेत्रों को प्रभावित करती है, शहरी बाढ़ एक मानव निर्मित आपदा है जो अनियोजित शहरीकरण और अपर्याप्त जल निकासी प्रणालियों जैसे कारकों से भी बढ़ जाती है।
- जैसे-जैसे हमारे शहर बढ़ते हैं, वे प्राकृतिक प्रक्रियाओं को बदलते हैं, पारगम्य भूमि सतहों को कंक्रीट और डामर से बदलते हैं, जो वर्षा जल को अवशोषित करने की जमीन की क्षमता को सीमित करता है।
- फलस्वरूप, सतही अपवाह जल निकासी प्रणालियों को प्रभावित करता है, जिससे व्यवधान, संपत्ति की क्षति और यहां तक कि जान की हानि भी होती है।

भारत में शहरी बाढ़ के कारण

- **अनियोजित शहरीकरण:** ज़मीन की बढ़ती कीमतों और शहर के केंद्रों में सीमित उपलब्धता के कारण प्रायः निचले क्षेत्रों में तेज़ी से शहरी विकास होता है।
  - दुर्भाग्य से, ये विकास प्रायः झीलों, आर्द्रभूमि और नदी के किनारों पर अतिक्रमण करते हैं, जिससे प्राकृतिक नालियों की क्षमता कम हो जाती है और बाढ़ की स्थिति भी खराब हो जाती है।
- **अभेद्य सतहें:** सड़कें, इमारतें और अन्य अभेद्य संरचनाएँ बारिश के जल को ज़मीन में रिसने से रोकती हैं।
  - जैसे-जैसे शहर विस्तारित होते हैं, मिट्टी की जल को सोखने की प्राकृतिक क्षमता कम होती जाती है, जिससे सतही अपवाह बढ़ता है।
- **भूमि का धंसना:** भारी इमारतों का वजन और अत्यधिक भूजल निष्कर्षण भूमि के धंसने का कारण बन सकता है, जिससे शहरी क्षेत्र बाढ़ के प्रति अधिक संवेदनशील हो जाते हैं।

स्पंज शहर: एक प्रकृति-आधारित समाधान

- 'स्पंज शहरों' की अवधारणा चीन में शुरू हुई और इसने विश्व भर में ध्यान आकर्षित किया है। ये शहर पारंपरिक ग्रे इंफ्रास्ट्रक्चर (पाइप और पंप) पर हरित इंफ्रास्ट्रक्चर पर बल देकर बाढ़ प्रबंधन को प्राथमिकता देते हैं।
- **हरित इंफ्रास्ट्रक्चर:** केवल कंक्रीट ड्रेनेज सिस्टम पर निर्भर रहने के बजाय, स्पंज शहर पौधों, पेड़ों, आर्द्रभूमि और पारगम्य फुटपाथ जैसे प्राकृतिक तत्वों को शामिल करते हैं। ये वर्षा जल को अवशोषित करके, इसके प्रवाह को धीमा करके और इसे शुद्ध करके 'स्पंज' के रूप में कार्य करते हैं।

कार्य प्रणाली

- **पारगम्यता:** स्पंज शहर पारगम्य सतहों को प्राथमिकता देते हैं। विशाल कंक्रीट के जंगलों के बजाय, वे हरे भरे स्थान, पार्क और छिद्रपूर्ण फुटपाथ शामिल करते हैं। ये सतहें वर्षा जल को ज़मीन में घुसने देती हैं, जिससे जलभृत भर जाते हैं और सतही अपवाह कम हो जाता है।
- **भंडारण और प्रतिधारण:** ये शहर रणनीतिक रूप से वर्षा जल का भंडारण करते हैं। वे भारी वर्षा के दौरान अतिरिक्त जल को एकत्रित करने के लिए प्रतिधारण तालाब, आर्द्रभूमि और भूमिगत भंडारण टैंक बनाते हैं। ऐसा करके, वे नीचे की ओर अचानक बाढ़ को रोकते हैं।
- **प्राकृतिक जल निकासी:** स्पंज शहर प्राकृतिक जल निकासी प्रणालियों को बहाल करते हैं। वे नदियों, नालों और आर्द्रभूमि को पुनर्जीवित करते हैं, जिससे जल प्राकृतिक रूप से बहता है। यह दृष्टिकोण प्रकृति के जल विज्ञान चक्र की नकल करता है, जिससे शहरी बाढ़ को रोका जा सकता है।

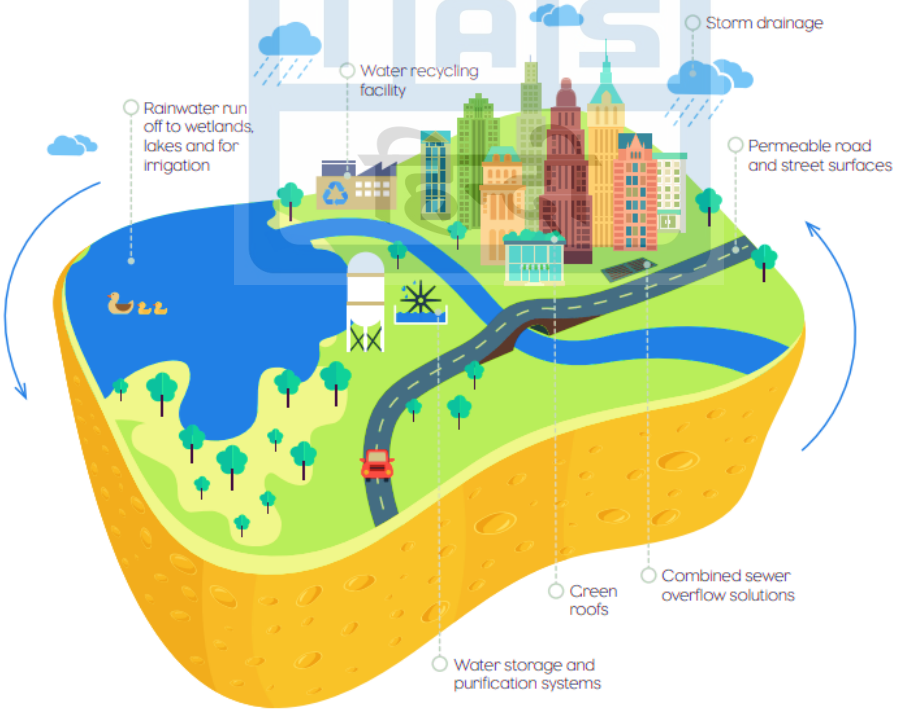

लाभ

- **बाढ़ में कमी:** वर्षा जल को रोककर और धीरे-धीरे छोड़ कर, स्पंज शहर अचानक आने वाली बाढ़ को रोकते हैं।
- **पारिस्थितिक जैव विविधता:** शहरी पार्क, हरे भरे स्थान और आर्द्रभूमि जैव विविधता में सुधार करते हैं और वन्यजीवों के लिए आवास प्रदान करते हैं।

- **हीट आइलैंड शमन:** वनस्पति शहरी क्षेत्रों को ठंडा रखने में सहायता करती है, जिससे हीट आइलैंड प्रभाव कम होता है।
- **पानी की कमी को कम करना:** वर्षा जल को एकत्रित करने से सूखे के दौरान पानी की उपलब्धता में योगदान मिलता है।

केस स्टडी: गुवाहाटी की बाढ़ संबंधी चुनौतियाँ

- **बुनियादी ढांचे की खामियां:** अपर्याप्त बुनियादी ढांचे के कारण नागरिक चिंता का सामना करते हैं। गुवाहाटी मेट्रोपॉलिटन डेवलपमेंट अथॉरिटी (GMDA) प्रायः जनता से जुड़े बिना या उनकी आवश्यकताओं को समझे बिना कार्य करती है। शहरी नियोजन के लिए ज़िम्मेदार नगर निगम को दरकिनार कर दिया जाता है, जिससे शासन में कमी रह जाती है।
- **अव्यवस्थित शहरी विकास:** ब्रोकर ने ज़मीन और प्लॉट को किराए पर देने में भूमिका निभाई है, जिसके परिणामस्वरूप अव्यवस्थित विकास हुआ है। खुली जगहों पर अतिक्रमण किया गया है, जिससे समस्या और बढ़ गई है।
- **अधूरी जल निकासी व्यवस्था:** खराब नियोजन और पिछली विकास योजनाओं के अधूरे क्रियान्वयन के कारण जल निकासी व्यवस्था अपर्याप्त बनी हुई है।

लचीलेपन की ओर कदम

- **नगर नियोजन योजनाएँ:** गुवाहाटी में हाल ही में अपनाई गई नगर नियोजन योजनाएँ प्रगति का संकेत हैं। हालाँकि, मूलभूत खामियों को ठीक करने के लिए अधिक कार्य करने की आवश्यकता है।
- **जल निकासी योजनाओं पर फिर से विचार करें:** प्रमुख जल निकासी चैनलों पर ध्यान केंद्रित करने और 1972 की जल निकासी योजना पर फिर से विचार करने से जल प्रवाह में सुधार हो सकता है। इसे प्रभावी ढंग से लागू करना महत्वपूर्ण है।

स्पंज शहरों के उदाहरण

- चीन स्पंज सिटी सिद्धांतों को लागू करने में सबसे आगे रहा है। चीन ने 2015 में स्पंज सिटी पहल शुरू की, जिसमें बाढ़ के पानी को सोखने वाली परियोजनाओं में निवेश किया गया। वे शंघाई, वुहान और ज़ियामेन सहित 30 शहरों में ये परियोजनाएँ बना रहे हैं।
    - **वुहान:** इस शहर ने बाढ़ के पानी के प्रबंधन के लिए पारगम्य फुटपाथ, हरी छतें और आर्द्रभूमि बनाकर अपने शहरी परिदृश्य को बदल दिया।
    - **चेंगदू:** झीलों और हरित स्थानों जैसी प्राकृतिक विशेषताओं को एकीकृत करके, चेंगदू ने बाढ़ के जोखिम को कम किया और पानी की गुणवत्ता में सुधार किया।
    - **ज़ियामेन:** ज़ियामेन की स्पंज सिटी पहलों में वर्षा उद्यान, प्रतिधारण तालाब और छिद्रपूर्ण फुटपाथ शामिल हैं।

अन्य शहर

- **चेन्नई:** ग्रेटर चेन्नई कॉरपोरेशन का लक्ष्य पूरे शहर को स्पंज में बदलना है। बाढ़ नियंत्रण और भूजल पुनर्भरण दोनों पर बल देते हुए 57 तालाबों को मॉडल स्पंज सिटी पार्क के रूप में विकसित किया जा रहा है।
- **बेंगलुरू:** बेंगलुरु अचानक आने वाली बाढ़ से निपटने के लिए भूमिगत भंडारण टैंकों सहित स्पंज सिटी सिस्टम की खोज कर रहा है।

निष्कर्ष

- चूंकि भारत तेजी से बढ़ते शहरीकरण और जलवायु परिवर्तन की दोहरी चुनौतियों का सामना कर रहा है, इसलिए स्पंज सिटी सिद्धांतों को अपनाना परिवर्तनकारी हो सकता है।
- प्रकृति को शहरी डिजाइन के साथ मिलाकर, स्पंज सिटी लचीले, सतत शहर बना सकते हैं जो प्रभावी रूप से पानी का प्रबंधन करते हैं, बाढ़ को कम करते हैं और समग्र जीवन-यापन को बढ़ाते हैं।

Source: IE

संक्षिप्त समाचार

हिंद महासागर रिम एसोसिएशन(IORA)

समाचार में

- अवैध, अप्रतिबंधित और अनियमित (IUU) मत्स्य पालन पर भारतीय महासागर रिम एसोसिएशन (IORA) सेमिनार का दूसरा संस्करण गोवा के नौसेना युद्ध कॉलेज में आयोजित किया गया।

हिंद महासागर रिम एसोसिएशन (IORA) के बारे में

- **गठन:** 1997 में स्थापित, यह एक बहुपक्षीय संगठन है जिसमें अफ्रीका, पश्चिम एशिया, दक्षिण एशिया, दक्षिण पूर्व एशिया और ऑस्ट्रेलिया के 23 सदस्य देश शामिल हैं।
  - IORA 1995 में नेल्सन मंडेला के भाषण से प्रेरित था, जहाँ उन्होंने हिंद महासागर के देशों के बीच सहयोग की आवश्यकता पर बल दिया था।
- **उद्देश्य:** यह समुद्री सुरक्षा, व्यापार सुविधा, मत्स्य प्रबंधन, आपदा जोखिम प्रबंधन और जलवायु परिवर्तन जैसे मुद्दों पर हिंद महासागर क्षेत्र में सहयोग को बढ़ावा देने पर केंद्रित है।
- **सदस्यता:** इसमें अफ्रीका, पश्चिम एशिया, दक्षिण एशिया, दक्षिण पूर्व एशिया और ऑस्ट्रेलिया के 23 सदस्य देश शामिल हैं, जो सभी हिंद महासागर के आसपास स्थित हैं। इनमें भारत, ऑस्ट्रेलिया, इंडोनेशिया, दक्षिण अफ्रीका, मलेशिया, यूएई और अन्य देश शामिल हैं।
- **संवाद भागीदार:** IORA के 11 संवाद भागीदार हैं, जिनमें चीन, अमेरिका, जापान, जर्मनी, रूस और सऊदी अरब शामिल हैं।
- **ट्रोइका नेतृत्व:** IORA का शीर्ष निकाय विदेश मंत्रियों की परिषद है, जिसकी वार्षिक बैठक होती है। प्रत्येक दो वर्ष में अध्यक्ष का चयन सदस्यों के बीच होता रहता है। वर्तमान में, श्रीलंका इसका अध्यक्ष है, भारत इसका उपाध्यक्ष है तथा पूर्व में बांग्लादेश इसका अध्यक्ष था।

महत्त्व

- हिंद महासागर का रणनीतिक महत्व बहुत अधिक है, क्योंकि वैश्विक तेल व्यापार का 80% और कंटेनरीकृत कार्गो का 50% इसी से होकर गुजरता है।
- IORA भारत को क्षेत्रीय भागीदारों के साथ जुड़ने के लिए एक मंच प्रदान करता है, जिससे भू-राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता से बचा जा सकता है, विशेषकर चीन के साथ।
- IORA के रणनीतिक फोकस में संप्रभुता के सम्मान पर बल देते हुए हिंद महासागर को व्यापार के लिए मुक्त और खुला रखना शामिल है।

- भारत, जो वर्तमान में IORA का उपाध्यक्ष है, सार्क और बिम्सटेक जैसे अन्य संगठनों में देखे जाने वाले विवाद के बिना क्षेत्रीय संबंधों को मजबूत करने के लिए संगठन का उपयोग करता है।

IORA की कुछ प्रमुख परियोजनाएं

- **समुद्री सुरक्षा और संरक्षा पर IORA कार्य समूह:** इसका उद्देश्य समुद्री सहयोग को बढ़ाना, सुरक्षित समुद्री मार्ग सुनिश्चित करना, समुद्री डकैती से निपटना और हिंद महासागर में समुद्री चुनौतियों का समाधान करना है।
- **जहाजों के विरुद्ध समुद्री डकैती और सशस्त्र डकैती का मुकाबला (ReCAAP-ISC):** हिंद महासागर में समुद्री डकैती और सशस्त्र डकैती को रोकने के लिए क्षेत्रीय क्षमताओं को मजबूत करने और खुफिया जानकारी साझा करने के लिए एक सहयोग।
- **हिंद महासागर सुनामी चेतावनी और शमन प्रणाली (IOTWMS):** सुनामी जैसी प्राकृतिक आपदाओं की निगरानी और उनका समाधान देने के लिए सदस्य देशों के साथ कार्य करती है।
- **IORA ब्लू इकोनॉमी पहल:** मत्स्य पालन, समुद्री व्यापार, पर्यटन और नवीकरणीय ऊर्जा जैसे उद्योगों पर ध्यान केंद्रित करते हुए समुद्री संसाधनों के सतत उपयोग को बढ़ावा देना।

Source: PIB

IMF द्वारा पाकिस्तान के लिए 7 अरब डॉलर के बेलआउट को मंजूरी

सन्दर्भ

- अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) के बोर्ड ने पाकिस्तान के लिए 7 अरब डॉलर की विस्तारित निधि सुविधा (EFF) को मंजूरी दे दी है, जिससे देश की संघर्षरत अर्थव्यवस्था को महत्वपूर्ण बढ़ावा मिलेगा।

परिचय

- अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) आर्थिक संकटों का सामना कर रहे देशों को मुख्य रूप से विभिन्न ऋण तंत्रों के माध्यम से वित्तीय सहायता प्रदान करता है। बदले में, प्राप्तकर्ता देशों को विशिष्ट आर्थिक सुधारों को लागू करना होता है।

IMF ऋण तंत्र

- **स्टैंड-बाय व्यवस्था (SBA):** इसका उद्देश्य अल्पकालिक भुगतान संतुलन की समस्याओं का समाधान करना है।
  - सामान्यतः यह 12 से 24 माह तक चलता है और इसमें राजकोषीय समेकन, मौद्रिक संकुचन और संरचनात्मक सुधार जैसी शर्तें शामिल होती हैं।
- **विस्तारित निधि सुविधा (EFF):** इसका उपयोग लंबे समय तक संरचनात्मक असंतुलन या गहरी आर्थिक समस्याओं वाले देशों के लिए किया जाता है, जैसा कि पाकिस्तान के मामले में है।
  - यह सामान्यतः लंबे समय तक (चार साल तक) समय को कवर करता है और मध्यम से लंबी अवधि के सुधारों पर ध्यान केंद्रित करता है।
  - शर्तें संरचनात्मक सुधारों, राजकोषीय नीतियों और ऋण स्थिरता पर ध्यान केंद्रित करती हैं।
- **त्वरित वित्तपोषण साधन (RFI):** इसका उपयोग आर्थिक आघातों, प्राकृतिक आपदाओं या संघर्ष के कारण भुगतान संतुलन की तत्काल आवश्यकताओं के लिए किया जाता है, बिना किसी पूर्ण विकसित आर्थिक कार्यक्रम की आवश्यकता के।

- **गरीबी उन्मूलन और विकास ट्रस्ट (PRGT):** गरीबी उन्मूलन और विकास कार्यक्रमों का समर्थन करने के लिए कम आय वाले देशों को रियायती ऋण दिया जाता है।
- **लचीली ऋण रेखा (FCL) और एहतियाती तरलता रेखा (PLL):** ये उन देशों के लिए हैं जिनकी आर्थिक बुनियाद अपेक्षाकृत मजबूत है, लेकिन जिन्हें बाहरी आघातों से बचने के लिए निवारण वित्तपोषण की आवश्यकता है।

अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष(IMF)

- IMF की स्थापना 1930 के दशक की महामंदी के बाद 1944 में की गई थी।
- वर्तमान में इस संगठन में 190 सदस्य देश शामिल हैं।
- प्रत्येक सदस्य को उसके वित्तीय महत्व के अनुपात में IMF के कार्यकारी बोर्ड में प्रतिनिधित्व प्राप्त है।
- उस समय IMF का प्राथमिक लक्ष्य अपने स्वयं के निर्यात को बढ़ावा देने की कोशिश कर रहे देशों द्वारा प्रतिस्पर्धी मुद्रा अवमूल्यन को रोकने के लिए अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक समन्वय लाना था। अंततः, IMF उन देशों की सरकारों के लिए अंतिम उपाय के रूप में विकसित हुआ, जिन्हें गंभीर मुद्रा संकट से निपटना पड़ा था।

Source: BS

भारत विश्व का तीसरा सबसे बड़ा इथेनॉल उत्पादक और उपभोक्ता है

सन्दर्भ

- भारत शर्करा एवं जैव ऊर्जा सम्मेलन के दौरान केंद्रीय खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण मंत्री ने कहा कि भारत अब विश्व का तीसरा सबसे बड़ा इथेनॉल उत्पादक और उपभोक्ता है।

परिचय

- वर्ष 2014-24 के दौरान गन्ने की खेती का क्षेत्रफल लगभग 18% बढ़ा है जबकि गन्ना उत्पादन में 40% की वृद्धि हुई है। साथ ही भारत ब्राज़ील के बाद गन्ने का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक है।

इथेनॉल उत्पादन बढ़ाने के लिए उठाए गए कदम

- केंद्र सरकार ने किसानों और चीनी उद्योग के हितों की रक्षा के लिए 2018 में चीनी का न्यूनतम विक्रय मूल्य (MSP) लागू किया था।
- **जैव-रिफाइनरियाँ:** भारत कृषि अपशिष्ट से इथेनॉल का उत्पादन करने के लिए कई दूसरी पीढ़ी की इथेनॉल बायोरिफाइनरियाँ स्थापित कर रहा है।
  - उदाहरण के लिए, 2022 में, इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड (IOCL) ने हरियाणा के पानीपत में एशिया की पहली 2G इथेनॉल बायोरिफाइनरी शुरू की।
- **कर में कमी:** सरकार ने इथेनॉल मिश्रित पेट्रोल (EBP) कार्यक्रम के तहत मिश्रण के लिए इथेनॉल पर वस्तु एवं सेवा कर की दर 18% से घटाकर 5% कर दी है।
- जैव ईंधन पर राष्ट्रीय नीति-2018, जिसे 2022 में संशोधित किया गया है, ने इथेनॉल उत्पादन के लिए विभिन्न फीडस्टॉक्स की पहचान की है, जैसे C & B - भारी गुड़, गन्ने का रस, चीनी युक्त सामग्री, स्टार्च युक्त सामग्री जैसे मकई कसावा, सड़े हुए आलू आदि।

निष्कर्ष

- किसान अन्नदाता से ऊर्जादाता बनने की ओर बढ़ रहे हैं, जो भारत के नवीकरणीय ऊर्जा परिदृश्य में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका को दर्शाता है।
- भारत के लिए एक सतत और लचीले भविष्य के निर्माण के लिए कृषि और हरित ऊर्जा के बीच सामंजस्य आवश्यक है, जो 2070 तक देश के शुद्ध शून्य उत्सर्जन के वैश्विक जलवायु लक्ष्यों के साथ संरेखित है।

Source: PIB

अभेद(ABHED)

समाचार में

- रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (DRDO) ने IIT दिल्ली के शोधकर्ताओं के साथ मिलकर ABHED बुलेटप्रूफ जैकेट विकसित की है।

ABHED के बारे में

- ये हल्के वजन वाली बुलेटप्रूफ जैकेट हैं।
- जैकेट में पॉलिमर और बोरॉन कार्बाइड सिरेमिक सामग्री का संयोजन उपयोग किया गया है, जो अपने उच्च शक्ति-से-वजन अनुपात के लिए जाना जाता है।
- यह उच्च-वेग वाले प्रोजेक्टाइल को सहन करने में सक्षम है, जिससे युद्ध के दौरान सैनिकों की सुरक्षा बढ़ जाती है।
- ABHED का स्वदेशी विकास भारत की रक्षा क्षमताओं को मजबूत करता है और देश को वैश्विक रक्षा बाजार में एक संभावित प्रतियोगी के रूप में स्थापित करता है।

Source: FE

■■■■